ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-9* October (Part-1) 2021
Innovation The Research Concept

पहाड़ी चित्र शैली में नारी सौंदर्य रूपांकन

Female Beauty Motif in Pahari Portrait Style

Paper Submission: 15/10/2021, Date of Acceptance: 23/10/2021, Date of Publication: 24/10/2021

पुनीता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
चित्रकला विभाग,
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद, भारत

सारांश

भारतीय समाज में नारी का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। विश्व साहित्य के आदि ग्रन्थ वेदों के पृष्ठ इस बात के साक्षी हैं कि भारतीय नारी पुरूष की ही भांति समान रूप से सामाजिक उत्सवों, यज्ञों, युद्धों, राजनीति की मन्त्रणा तथा दार्शनिक एवं साहित्यिक चर्चाओं में भाग लेती रही है। साहित्यिक सृजन का मूल प्रेरणा-स्रोत बहुत कुछ अंशों में नारी-जीवन से ही सम्बन्धित है। विश्व का सम्पूर्ण बाङ्मय नारी-जीवन की विभिन्न भाव भंगिमाओं के चित्रण से भरा हुआ है। नारी-हृदय की भावनाओं उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं तथा उसके जीवन की समस्याओं के आंकलन से ही विश्व के मनीषी कलाकारों ने श्रेष्ठ कला का सृजन किया। भावनाओं का यह संसार पुरूष जाति की अपेक्षा नारी-हृदय के कहीं अधिक निकट है, अतः कलाकारों की रूचि नारी-जीवन की ओर अधिक रही है। साहित्य में नव रसों का वर्णन किया गया है, जिसमें श्रृंगार, शान्त और करूण रस को प्राथमिकता दी गई है। इन तीनों ही रसों की सृष्टि में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नारी जीवन का चित्रण अपरिहार्य है।

Women have a proud place in Indian society. The pages of the Vedas, the ancient texts of world literature, bear witness to the fact that Indian women have been participating in social festivals, yagyas, wars, political discussions and philosophical and literary discussions equally like men. The original source of inspiration for literary creation is related to women's life in many parts. The entire universe of the world is full of depictions of different expressions of female life. From the assessment of the feelings of the woman's heart, the characteristics of her personality and the problems of her life, the world's wisest artists created the best art. This world of feelings is much closer to the female heart than the male race, so the interest of the artists has been more towards women's life. Navrasa has been described in the literature, in which preference has been given to makeup, calm and compassionate. In the creation of all these three rasas, depiction of female life directly or indirectly is indispensable.

मुख्य शब्द : प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, करूण
Keywords : Direct, Indirect, Compassionate.

प्रस्तावना

पहाड़ी चित्रों में नारी के पहाड़ी सौन्दर्य की छटा व्याप्त रही है। पहाड़ी चित्रकार सौन्दर्य के उपासक रहे हैं। चित्रण में चित्रकारों ने नारी- सौंदर्य की सच्ची उपासना की है। पहाड़ी चित्रशैली में चित्रित लघुचित्रों की नारी ही वस्तुतः लोकप्रियता का कारण रही है। यह वास्तविकता के निकट, चिर नवीन, चिर यौवन तथा लोक संस्कृति की छाप युक्त रही। यहाँ पहाड़ी, नारियाँ, पहाड़ी, चित्रशैली की आत्मा हैं। इन चित्रशैलियों को साकार रूप, सुसज्जित सुन्दर नारियों द्वारा ही प्राप्त हुआ है। कुशल एवं स्वाभाविक चित्रण द्वारा सुकुमार आकृतियों में नारियों का अपार सौन्दर्य तथा शरीर की लावण्य-प्रभा विशिष्ट कान्तियुक्त दृष्टिगोचर होती है। पहाड़ी चित्रशैली में विविधताओं से युक्त नारी के सौन्दर्य को कलाकारों ने अमरत्व प्रदान किया है।

पहाड़ी कला में सौन्दर्य की अभिव्यक्ति नारी के माध्यम से की गई है। चित्रकारों ने नारी-अंकन में सौन्दर्य के ऐसे-ऐसे आयाम स्थापित किये हैं जो अद्वितीय है। पहाड़ी कला में विविध विषयों का भण्डार है। इन चित्रों में नारी-चित्रण की परम्परा भी एक व्यापक रूप लिये हुए है। नारी अनुभूतिपूर्ण, श्रद्धापूर्ण, सौम्य भावयुक्त कोमल एवं अन्तर्मुखी है अतः पहाड़ी चित्रकार ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति नारी के प्रति सदैव आसक्त रहे हैं और उन्होंने नारी-चित्रण में नारी-जन्य समस्त विशेषताओं को प्रतिपादित करके अपनी कला को उत्कृष्ट बनाया है।

पहाड़ी चित्रशैली को साकार रूप इन सुसज्जित नारियों द्वारा ही प्राप्त हुआ है। चित्रों की नारी भारतीय नारी के रूप की विविधताओं को प्रस्तुत करती है। कहीं भोली मासूम नारी का रूप है तो कहीं चंचल अल्हड़, कहीं धर्मपूजा को समर्पित नारी चित्रित है तो कहीं कर्मठ परिश्रमी नारी। अद्वितीय सौंदर्य से परिपूर्ण यह नारी आकृतियां अश्लीलता से दूर, भाव एवं भक्ति के साथ आध्यात्मिकता का आवरण लिये चित्रित है। पहाड़ी चित्रशैली में चित्रित अनेक श्रृंखलायें नारी के प्रेम-उल्लास, सौन्दर्य, रहन-सहन तथा आचार-विचारों को भी प्रस्तुत करती हैं, जिसमें वस्त्राभूषण नारी-सौंदर्य का वर्धन करते हैं।

पहाड़ी लघुचित्रों पर संस्कृति की गहरी छाप स्पष्ट दिखायी देती है अतः पहाड़ी शैली के चित्रों में चित्रित नारी पर इस संस्कृति का अधिक प्रभाव दिखाई देता है। नारी विस्तृत लोक संस्कृति का मौन रूप में प्रचार करती प्रतीत होती है। कलाकारों ने समाज का ही एक अभिन्न अंग होने के कारण नारी के रहन-सहन तथा रीति-रिवाजों का अवलोकन कर, नारी-रूपों को चित्रों में सफलतापूर्वक दर्शाया है।

नारी-चित्रण विविध रूपों में किया गया है यथा-देवी रूप- (राधा, सीता, ब्रह्मणिका, पार्वती, दुर्गा,) राजसी रूप-रानी, राजकुमारी एवं अन्य उच्च-वर्गीय नारियाँ), मध्यम वर्गीय रूप-(गृहणी, गोपी, माँ, सास, पत्नी एवं सखी) तथा निम्न-वर्ग के (दासियाँ, प्रतिहारिकायें एवं सन्देशिका नारियाँ), इनके अतिरिक्त नर्तकी, गायिका-वादिका एवं विधवा-सधवा नारी-रूप भी अंकित हुए हैं नायिका के सुख-दुख तथा संयोग-वियोग का चित्रण भी अति आवश्यक है। प्रेमिका रूप का भी विस्तृत अंकन किया गया है जिसमें नारी को आध्यात्मिक चित्रण द्वारा प्रेमिका एवं पत्नी रूपों में चित्रित किया गया है। इन चित्रों में नारी उस पवित्र प्रेम का रूप है, जो आत्मा परमात्मा का होता है। इस प्रकार नारी का प्रेम शारीरिक सौन्दर्य से उठकर आध्यात्मिक एवं पवित्र प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। इसकी आत्मा को राधा के रूप में अंकित किया है।

पहाड़ी चित्रों में भारतीय कला-परम्परा के अनुसार नारी के रूपात्मक एवं भावात्मक तत्वों को विशेष स्थान दिया गया है। तत्कालीन साहित्य, संस्कृति एवं धर्म से प्रभावित चित्रकारों की भावाभिव्यक्ति नारी-चित्रण के द्वारा ही सम्भव थी। चित्रकारों ने मूलतः धार्मिक एवं साहित्यिक ग्रन्थों के आधीन ही चित्र चित्रित किये हैं। जिसमें कृष्ण-लीला और नायक-नायिका सम्बन्धी चित्र विशेष रूप से अपना महत्व रखते हैं। उक्त विषयों के आधीन चित्रकारों ने नारी-अंकन द्वारा नारी के विविध रूवरूपों को प्रदर्शित करने के लिए, उसके द्वारा प्रयुक्त वस्त्र और आभूषणों के आकार-प्रकार एवं सौंदर्य को प्रधान विषय बनाकर, सौंदर्य तत्व एवं आध्यात्मिक भावों को सुगम तथा सर्वग्राह्य बना दिया। पहाड़ी चित्रशैली के विभिन्न स्वरूपों में चित्रकार के भावों की सफल अभिव्यक्ति है। नारी-चित्रण इस चित्रशैली का महत्वपूर्ण पक्ष है।

पहाड़ी चित्रकारों ने अपनी मनोनुकूल कल्पनाओं को नारी चित्रण के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। नारी-चित्रण में कलाकारों ने कल्पना-शक्ति को सहज ही अभिव्यक्त किया है। जिस प्रकार कवियों ने नायिका के सौन्दर्य वर्णन तथा प्रेम सम्बन्धी अनेक स्थितियों के मध्य उसका मानसिक चित्रण किया है उसी प्रकार चितेरों ने रंग तथा रेखाओं के माध्यम से उसे सजीव किया है। नारी-सौंदर्य का स्वाभाविक तथा विषयानुकूल चित्रण भारतीय चित्रकला के इतिहास की वह सुन्दर कड़ी है जिसको समय की अनुकूलता एवं कलाकारों की पवित्र भावनाओं ने इतना सुन्दर रूप पहाड़ी शैली में प्रदान किया है कि बरवस ही अतीत के छोर से विकास के अन्तिम चरण तक इसकी विशेषताओं को समझने की जिज्ञासा प्रबल हो उठती है, निःसन्देह नारी सौन्दर्य पहाड़ी चित्रकला का मुख्य केन्द्र-बिन्दु रहा है।

लघु चित्रों की श्रंखला में बँधी हुई पहाड़ी चित्रकला, नारी- सौन्दर्य से परिपूर्ण आध्यात्मिकता के संसार से आयी प्रतीत होती है। भाव एवं भक्ति से युक्त नारी को चित्रों में प्रतिबिम्बित किया गया है। पहाड़ी चित्रकारों ने अपनी इस अधिष्ठात्री देवी को अनेक मुद्राओं में सौंदर्य रूप से परिपूर्ण चित्रित किया है।

पहाड़ी चित्रकारों ने नारियों का चित्रण उनकी जाति, वंश एवं स्तर को ध्यान में रखकर किया है। उच्चवर्गीय, मध्यमवर्गीय एवं निम्नवर्गीय जाति की नारियों को उनके स्तर के अनुरूप ही वस्त्राभूषण धारण किये सौदर्य रूप प्रदान कर चित्रित किया गया है। सामान्यतः पहाड़ी नारियों को निम्न वर्गो में विभाजित कर उनके रूप सौंदर्य को चित्रित किया है। देवी नारी, उच्चवर्गीय नारी, मध्यमवर्गीय नारी, निम्नवर्गीय नारी, नर्तकी नारी, नायिका के रूप में नारी। इसके अतिरिक्त नारी, नायिका अथवा प्रेमिका के रूप में चित्रित की गई है। उसके मिलन, विरह, संयोग एवं वियोग का सौंदर्य रूप चित्रण बारह महीनों तथा ऋतुओं के साथ समन्वित कर, किया गया है।

पहाड़ी चित्रों में नारियों को पारदर्शी दुपट्टा अथवा रेशम का दुपट्टा ओढ़े हुए चित्रित किया गया है। शीत ऋतु में यह दुपट्टे गर्म शाल के रूप में पहने हुए हैं। इन्हें 'पट्टू' भी कहते हैं। यह गर्म शाल पशमीने तथा ऊन से निर्मित होते थे। जिनके किनारे काले, नीले अथवा लाल रंग से रंगे प्रतीत हाते हैं।1 वस्त्रों के माध्यमों में करनाटी, डोरिया, पंचतोरिया एचं चाँचर के वर्णनों में से डोरिया वस्त्र का वर्णन अबुलफज़ल ने अपने सूती वस्त्रों की सूची में किया है।[2] पंचतोरिया वस्त्र महीन होता था, शीत ऋतु की समाप्ति एवं ग्रीष्म ऋतु के आगमन पर होली के त्यौहार पर स्त्रिंयाँ यह वस्त्र धारण करती थी। एक किम्बदन्ती के अनुसार पंचतोरिया वस्त्रों की ओढ़नी नूरजहां ने प्रचलित करवायी थी।[3]

पहाड़ी नारी के सौदर्य की वृद्धि में शिरोवस्त्र टोपी का बहुत बड़ा कारण है। सिर के वस्त्रों में टोपी (गोल व नुकीली टोपी) एवं पगड़ी पहाड़ी चित्रों में नारियों को पहने चित्रित किया गया है। टोपी को लोक भाषा में कहीं-कहीं 'तीपंग'[4] कहते हैं। तीपंग को कश्मीरी टोपी भी कहते हैं।[5] इस टोपी में मखमली कपड़े की रंगीन पट्टी होती है। यह पट्टी साधारणतः हरे, नीले, लाल, गहरे लाल, पीले तथा बैंगनी रंग की होती है। टोपी की बनावट में इस पट्टी को मोड़कर नीचे किया जा सकता है, जिससे अधिक ठण्ड के समय यह कानों को ढ़क सके। विवाह, त्यौहारों तथा अन्य उत्सवों पर स्त्रियां इस टोपी में फूल भी लगाती हैं। कुल्लू की स्त्रियां ऐसी गर्म टोपियाँ पहनती थी, जिनमें एक ओर एक झालर सी लटकी रहती थी। इनके काले तथा गहरे- भूरे रंग को केश परस्पर गुँथे हुए उस टोपी के चारों ओर लिपटे रहते थे।[6] स्पीती की स्त्रियां जो टोपी पहनती थीं, उनकी बनावट ऐसी होती थी कि उससे कानों को ढ़का जा सके। [7] चौड़े जिले की स्त्रियां एक छोटी टोपी पहनती थी, जिसका शीर्ष एक त्रिभुज के आकार का होता था जो पीछे की ओर लटक जाता था। चम्बा के ही पांगी जिले में एक टोपी का प्रचलन था,

जिसका ऊपरी भाग नीचे के आधार की अपेक्षा अधिक बड़ा होता था। [8] अतः स्पष्ट होता है कि राजकुलों की कन्यायें एवं रानियाँ पगड़ी- बाँधती थीं। बारहवीं शताब्दी में पगड़ी, स्त्रियों के लिए अपिरिचित पहनावा नहीं रहा।[9] तत्पश्चात् मुगल प्रभाव से यह पहनावा और अधिक लोकप्रिय हो गया।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोधपत्र का उद्देश्य पहाड़ी चित्र शैली में नारी सौंदर्य रूपांकनकरना है।

निष्कर्ष

पहाड़ी नारी के सौदंर्य वृद्धि में उत्तरीय वस्त्र दुपट्टा एवं चुनरी चित्रकारों ने चित्रित किया। दुपट्टा जिसे लोक भाषा में 'चुन्नी' 'चुनरिया', 'ओढ़नी', एवं 'चादरू' कहते हैं, सिर से वक्षस्थल पर पहनने का खुला वस्त्र होता है। यह वस्त्र पहाड़ी चित्रकला में बहुत चित्रित हुआ है। यह दुपट्टे लहंगे, घाघरे तथा पेशवाज़ के साथ पहने जाते हैं। ऋतुओं एवं उत्सवों के अनुसार इन दुपट्टों का वर्ण-विधान भी परिवर्तित होता रहता है। विवाहिता स्त्रियां रंगीन एवं विधवा स्त्रियां सफेद दुपट्टे पहनती हैं।[10] "चित्रो में स्त्रियों को अत्यन्त आकर्षक रूप के दुपट्टे, ओढ़नी, एंव चादर भिन्न-भिन्न प्रकार से पहने चित्रित किया गया है। लहँगों पर अनेक चुन्नट देकर पीछे से सिर पर ओढ़ते हुए सामने वक्ष को ढकते हुए, इसे ओढ़ा जाता है। कार्य करती हुई स्त्रियाँ सिर पर ही कस कर दुपट्टा बाँध लेती हैं, जो उनकी पीठ पर फैला रहता है। पगड़ी पर भी दुपट्टा बाँध कर पीछे पीठ पर फैलने के लिए चित्रों में छोड़ा चित्रित किया गया है। आकार में यह दुपट्टे लम्बे पतले होते हैं। कहीं सिर पर ओढ़कर दायें कन्धे पर डाले दुपट्टे चित्रित हैं तो कहीं बाये कन्धे पर। पहाड़ी चित्रों की उप शैलियों मंे नारियों को पारदर्शी एवं अपारदर्शी बहुत सुन्दर दुपट्टे ओढ़े नारी सौंदर्य का रूपांकन किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Jag Mohan Shakrori, A village survay Census of India, Vol. XX, Part VI, No. 2 page- 20*
2. *आइने अकबरी, प्रथम जिल्द पेज- 101*
3. *हरिवंश राय, हिन्दी साहित्य, पेज-95*
4. *Badan Pal, Hand Book of the Manufactures and Arts of the Punjab forming, Vol. 2, 1872, Page- 101 Quoted by C.S. Chawra in "Social and Economic History of Punjab", on page 54.*
5. *William Havard Rusal, My Diary in India in the year 1958-59, Vol. 11 London 1860, Page 179.*
6. *Murcraft Travells, Page 181*
   Bhagar, "Kangra District Gazetteer 1897, Page- 35
7. *C.S. Chawra, Social and Economic History of Punjab, Page-56 .*
8. *C.S. Chawra, Social and Economic History of Punjab, Page-57.*
9. *Gureo, Indian Costumes Page-97 .*
10. *R.C. Pal Singh, Hatli- A village survey census of India, 1961, Himanchal Pradesh, P. 10*